Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

ग्वालियर घराना - भारतीय शास्त्रीय संगीत की गंगोत्री

YASH DEWALE[1] AND DR. SANTOSH KUMAR PATHAK[2]
1 Research Scholer, Banasthali Vidyapith, Assistant Professor, MSU, Vadodara
2 Associate Professor, Banasthali Vidyapith, Rajasthan

सार: *प्राचीन काल में भारतीय संगीत दिव्य और अलौकिक माना जाता था | उसका सम्बन्ध ऋषियों और मुनियों से होता था। धर्म, अध्यात्म के वातावरण ही में उसका जन्म और विकास हुआ और मन्दिरों और आश्रमों में उसका पालन-पोषण हुआ। मंदिर, राज- महल और राजदरबार संगीत के मुख्य केन्द्र बने। राजा और महाराजा भी संगीत की उन्नति के लिए और संगीतज्ञों के निर्वाह के लिए सब तरह के आवश्यक साधनों का आयोजन करते थे और संगीत का उचित संरक्षण करते थे | संगीत की ऐतिहासिक तपोभूमि पर ग्वालियर घराने के प्रभाव की संगीतामृत नादध्वनि निरंतर गूँजती रही है | ग्वालियर पर जिन राजवंशों का प्रभाव रहा, वे सभी संगीत के प्रेमी व जानकर थे | तोमर तथा सिंधिया राजवंशों ने ग्वालियर में संगीत को पल्लवित किया| घराना स्थापित करने व संगीत के प्रचार-प्रसार में जितना योगदान मियां तानसेन, हस्सू, हद्दू, नत्थू ख़ान, उस्ताद निसार हुसैन, पंडित इचलकरंजीकर, हाफ़िज़ अली, पर्वत सिंह, शंकर पंडित, राजाभैया पूछवाले इत्यादि बुजुर्गों का है ,उतना ही योगदान यहाँ के राजघरानों का भी रहा है | ग्वालियर की संगीत कला भारतवर्ष के संगीत इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है | भारतीय संगीत के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार में ग्वालियर का प्रमुख स्थान रहा है |*

कुंजी शब्द: *शास्त्रीय संगीत, ग्वालियर घराना , ग्वालियर की संगीत परंपरा, ग्वालियर घराने के कलाकार, ग्वालियर घराने की विशेषताएँ।*

प्रस्तावना

हिन्दुस्तानी संगीत के ज्ञान भण्डार को जीवित रखने का श्रेय घरानों को जाता है | कोई भी घराना अपनी शैली के नाम से जाना जाता है | शैली से तात्पर्य गायकी या बाज से है | किसी घराने की शैली की सुव्यवस्थित परंपरा और उसके विशेष संगीत का क्रम ही उसे घराना बनने का अधिकार देते हैं | गायकों अथवा वादकों की कम से कम तीन या चार पीढ़ियों के बाद ही किसी घराने का जन्म हो सकता है और संगीत में प्रगति हो सकती है | घराने की शिष्य परंपरा का उत्तरदायित्व है की वह उस विशेष शैली को जीवित रखे | आधुनिक गायन शैलियों में ख्याल शैली सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रचलित है |

"ख्याल शैली को लोकप्रियता की इस पराकाष्ठा तक पहुँचाने में ग्वालियर घराने के गायकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है |"[1] ग्वालियर घराना संगीत के अन्य घरानों की गंगोत्री मानी जाती है | प्राचीन ग्रंथो में विद्यादान को महादान कहा गया है। कला का दान श्रृंखलाबद्ध तरीके से अग्रसर हुआ तभी परंपराएँ बनी व घरानों का विकास संभव हुआ। आधुनिकता को स्वीकार करते हुए ग्वालियर घराने में श्रृंखलाबद्ध तरीके से परंपरा का निर्वाह हुआ, "भारतीय संस्कृति के इतिहास में ग्वालियर की संगीत संस्कृति का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। पुरातात्विक अवशेषों द्वारा ग्वालियर में प्राचीन काल से ही संगीत संस्कृति की विद्यमानता प्रमाणित है।"[2]

ग्वालियर का सांगीतिक इतिहास

राजा मानसिंह तोमर से पूर्व ग्वालियर में विष्णुपद गायन शैली का विकास हो चुका था, जिसे ध्रुपद गायन शैली की सम प्राकृतिक शैली माना जा सकता है। "राजा मानसिंह के समय में संगीत और संस्कृति का बहुमुखी विकास हुआ। उन्होंने ध्रुपद विधा का परिष्कार कर प्रचार किया।"[3] इन्हीं के काल में प्रथम संगीत विद्यापीठ की स्थापना हुई | यहाँ तानसेन, बैजू बावरा जैसे युगपुरुषों ने संगीत की शिक्षा ली। मानसिंह स्वयं शासक होने के साथ-साथ संगीत के विद्वान भी थे। उन्होंने कई ध्रुपदों की रचना की और "मानकौतूहल" नामक ग्रंथ लिखा। "1542 ई. में इस्लामशाह को ग्वालियर इतना भाया की उसने ग्वालियर को अपनी राजधानी बना लिया। उसे भी संगीत से लगाव था , उसने अपने राज्य में बाबा रामदास , नायक चरजु जैसे संगीतज्ञों को विशेष स्थान प्रदान किया |"[4] ग्वालियर के संगीत की यह यात्रा संगीत सम्राट तानसेन से होते हुए 17वीं शताब्दी तक आ पहुँची | इस समय मराठाओं की सत्ता का उदय हुआ| पेशवा के तीन सेना नायक सिंधिया, होलकर, पवार ने क्रमशः ग्वालियर , इंदौर , धार राज्यों की स्थापना की |

18 वीं शताब्दी में दौलत राव सिंधिया के शासनकाल में संगीत को संरक्षण मिला। विद्वानों के मतानुसार इसी काल में ग्वालियर घराने का प्रारंभ नत्थन पीरबख्श के द्वारा हुआ। नत्थन पीरबख्श को अपने पिता कादिरबख्श से संगीत की शिक्षा मिली थी। नत्थन पीरबख्श ने ग्वालियर में संगीत का प्रचार-प्रसार किया और उनकी गायन शैली ''ग्वालियर घराने'' के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस कारण नत्थन पीरबख्श

ग्वालियर घराने की ख्याल गायकी के जन्मदाता माने जाते हैं। भारतवर्ष में कुछ राजघराने ऐसे हुए हैं जिन्हे ये ज्ञात था कि, सुसंस्कृत समाज के निर्माण में कला व संगीत की अहम भूमिका होती है | सिंधिया राजवंश ने संगीत एवं कला को अपनी संस्कृति का हिस्सा माना, संगीत के प्रचार-प्रसार के साथ शास्त्रीय संगीत का ज्ञान गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत ज्ञान लिया तथा यहीं से गुरु - शिष्य परंपरा को पनपने का अवसर मिला |

परंपरा के विकास में संगीताचार्यों एवं आश्रयदाताओं का योगदान

ग्वालियर के संगीताचार्यों ने एक ओर जहाँ अपने आश्रयदाताओं को प्रमुदित किया वहीं दूसरी ओर एक विशाल शिष्य परम्परा को स्थापित करके भारतीय संगीत में अपना अपूर्व योगदान दिया| ख्याल शैली के घरानों के विकास के सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि ख्याल का विकास अधिकतर विभिन्न नरेशों के राज्याश्रय में हुआ है। राज्याश्रय मिलने से विभिन्न गुरुजनों ने निश्चिन्त होकर इस शैली की निरन्तर साधना करते हुए एक सुदीर्घ गुरुशिष्य परम्परा को जन्म दिया था। अतः अपनी इस परम्परा को अधिकतर अपना नाम न देते हुए जिन स्थानों पर उन्हें नरेशों का राज्याश्रय प्राप्त था,उन्हीं के नाम से इन घरानों का नामकरण किया गया। "खयाल गायकी का सर्वप्रमुख घराना ग्वालियर घराने को माना जाता है क्योंकि इसमें एक ओर जहाँ ध्रुपद से ख्याल के विकास के प्रमुख स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होते हैं। वहीं दूसरी ओर सर्वाधिक शिष्य परंपरा भी इसी घराने की मानी जाती है।"[5]

दौलत राव सिंधिया के कार्यकाल में बड़े मोहम्मद खान, नत्थन पीरबख्श, पंडित चिंतामणि मिश्र, नारायण शास्त्री जैसे संगीत के पुरोधा थे | जिन्होंने ग्वालियर घराने की नींव रखी । जनकोजी राव सिंधिया के शासनकाल में हस्सू, हद्दू , नत्थू ख़ान, चिंतामणि मिश्रा, गुलाम अली , जोरावर सिंह , सुखदेव सिंह जैसे कलाकारों ने संगीत का प्रचार-प्रसार किया। जयाजी राव सिंधिया के शासनकाल में गुरु - शिष्य परंपरा का प्रभाव उभर के सामने आया। ग्वालियर सांगीतिक विद्या प्राप्ति का स्थल रूप जग में प्रसिद्ध हुआ | लोग विद्या प्राप्ति के लिए यहाँ दूर-दूर से आया करते | वासुदेव जोशी, बाबा दीक्षित, बड़े बालकृष्ण बुआ , विष्णुपंत, बंदे अली जैसे कई कलाकारों ने हस्सू, हद्दू , नत्थू ख़ान से तालीम पाकर ग्वालियर घराने का प्रचार - प्रसार किया | जयाजी राव ने स्वयं नत्थू ख़ान से गायन का गहन प्रशिक्षण लिया | इनके काल में निसार हुसेन, मुहम्मद ख़ान, रहमत ख़ान इत्यादि कलाकारों ने संगीत का प्रचार प्रसार किया।

माधवराव सिंधिया का काल भारतीय शास्त्रीय संगीत का स्वर्णिम काल था | "अपनी रियासत में इच्छुक व्यक्ति को जो संगीत शिक्षा का आग्रही हो शिक्षा सुलभ कराने हेतु ' माधव संगीत विद्यालय ' भातखंडे जी के सहयोग से खोला |"[6] माधवराव स्वयं संगीत के जानकार थे, शंकरपंडित व फजल हुसैन जैसे कलाकारों से संगीत सीखा था | आम जन के लिए संगीत शिक्षा एवं कलाकारों के लिए स्वतंत्र मंच की शुरुआत इसी काल से हुई | यह समय वर्तमान सांगीतिक स्थिति की नीव था | महाराज के शासन काल में निसार हुसैन, शंकर पंडित, भाऊ साहेब गुरुजी, विष्णु बुआ देशपांडे, हाफ़िज़ अली, पर्वत सिंह जैसे गुरु व कलाकार हुए | इन संगीताचार्यो ने लंबी शिष्य परंपरा रची, जिसका सुप्रभाव आगे देखने को मिला |

शास्त्रीय संगीत के मंचीय कार्यक्रम की शुरुआत इसी काल से हुई | यहाँ के कलाकारों का मंचीय कार्यक्रम ग्वालियर के अलग - अलग स्थानों पर आयोजित होता था, जिसे महफ़िल की संज्ञा दी जाती | दूसरे प्रांतों के सामान्य जन व कलाकार संगीत की शिक्षा के लिए ग्वालियर आया करते और यह सिलसिला लंबा चला | जीवाजी राव सिंधिया के शासनकाल तक आते-आते ग्वालियर भारतीय शास्त्रीय संगीत की राजधानी बन चुका था। संगीत को पाठयक्रम रूप में ढालकर संगीत की शिक्षा प्रदान की गई | बाहर से संगीत सीखने वाले छात्रों के रहने तथा भोजन की सुविधा महाराज द्वारा की गई | इस समय के राजाभैया पूछवाले, हाफ़िज़ अली खान, कृष्णराव पंडित, बाला भाऊ उमडेकर, दाजी सारोलकर, बाला साहेब पूछवाले इत्यादि गुरुओं व कलाकारों द्वारा संगीत को नई दिशा प्रदान की गई |

ग्वालियर घराने की विशेषताएं

- प्रचलित रागों का गायन, ज़ोरदार खुली आवाज का गायन तथा ध्रुपद अंग के ख्याल ग्वालियर में पाए जाते हैं |

- तानों में विविधता देखने को मिलती है। आरोही - अवरोही सपाट तान और गमक युक्त तान, फिरत तान, मिट्टी की तान, जबड़े की तान इत्यादी का प्रयोग यहाँ होता है |
- ग्वालियर घराने के प्रतिनिधि गायक ध्रुपद के समान गायन के पूर्व राग का विस्तार नहीं करते बल्कि सीधे बंदिश से ही गायन प्रारंभ करते थे।
- ख्याल गायक बंदिश के दोनों विभाग स्थायी और अंतरा को पूरा गाने के पश्चात् ही उस राग की बढ़त करते हैं। राग का विस्तार तान और आलापों के माध्यम से किया जाता है।
- "ग्वालियर गायकी में राग की बढ़त नहीं बल्कि बंदिश की बढ़त या विस्तार होता हैं। बंदिशों में राग की विशेष स्वर संगतियों का समावेश होता है, इन्हीं स्वरसंगतियों का आलाप द्वारा विस्तार किया जाता है, अतः बंदिशों में ही राग का फार्मूला पैक रहता है।"[7]
- ध्रुपद से प्रभावित होने के बावजूद भी ख्याल गायकी में ध्रुपद की भाँति दुगुन, तिगुन, चैगुन नहीं की जाती। ध्रुपद समान लयकारी का प्रयोग केवल बोलतानों से गायन में वैचित्र लाने के लिए होता है।
- छोटे ख्याल में अत्यन्त कम आलाप गाये जाते हैं, मध्यलय की बंदिश में भी तानों के विभिन्न प्रकार गाये जाते हैं। छोटे ख्याल के गायन के बाद कुछ गायक तराना, अष्टपदी या भजन द्वारा गायन का समापन करते हैं।
- मुख्य रूप से बंदिशों के माध्यम से ही ग्वालियर घराने की पहचान होती है। इस परम्परा में अनेक गायक वाग्गेयकार के रूप में भी प्रसिद्ध हुए हैं और उन्होंने रागांग और ख्याल गायकी के उपयुक्त अनेक बंदिशों का सृजन किया ।
- शास्त्रीय दृष्टि से देखा जाये तो ग्वालियर ख्याल गायकी की परम्परा में गायक परम्परागत गायकी में राग के क्रमबद्ध न्यास स्वरों के तीनों सप्तकों में रागांग, विलम्बित आलाप, उन्हीं आलापों की मध्यलय में क्रमशः स्वरसंगतियों से बढ़त, गीताक्षरों से बोल आलाप, तत्पश्चात् सरल, सपाट ढाली रागांग गमक की खुली आवाज में अकारांत धीमी तानें, द्रुतगति में फिरत रागांग चढ़ी-उतरी तानें, बोलतानें आदि गाते हैं और यही ग्वालियर घराने की गायकी का साधारण क्रम है।
- ग्वालियर घराने की गायकी में स्वर और लय दोनों का ही मेल दिखाई देता है। स्वर और लय को साथ लेकर चलना ग्वालियर घराने की गायकी की विशेषता है।
- एक ही राग में विभिन्न स्वरूप और विभिन्न अंगों की बंदिशों को वेदों के समान याद करना भी ग्वालियर घराने की विशेषता है।"प्रत्येक राग में 15-20 चीजों का संग्रह होना इस घराने की अपनी एक अलग ही विशेषता है, जो शायद ही किसी दूसरे घराने में हो।"[8]
- ग्वालियर घराने के गायक अप्रचलित राग बहुत कम गाते हैं। ग्वालियर गायकी के ख्याल का ठेका विलंबित की दृष्टि से मुख्यतः तिलवाड़ा ही होता है। झूमरा तथा आड़ा चौताल ताल में भी ख्याल गाने का प्रचलन इस गायकी में है।
- ताल क्रिया की अतीत-अनाघात (लय के प्रकार) क्रिया भी ग्वालियर घराने की गायकी की विशेषता है।
- एक ही प्रकार की तानें भिन्न-भिन्न रागों में प्रयोग होते हुए भी राग भंग न होने देना यह भी ग्वालियर गायकी की अनोखी विशेषता है। ग्वालियर घराने के गायकों की तानों की गति में विविधता होती है।

- मट्ठी तान भी ग्वालियर गायकी का एक विशिष्ट रूप है। मट्ठी तान का अर्थ अतिशय धीरे ली हुई विशेष गमक युक्त तान है। "जलद तान से यह प्रकार कठिन होता है और ऐसी मंद गति की तान को जोड़कर ही जलद तान लेकर सम पर आना ग्वालियर गायकी का एक उत्कृष्ट कार्य होता है।"[9]

- कई दुर्लभ शैलियां ग्वालियर घराने में देखने को मिलती हैं जैसे - अष्टपदी, टप्पा, टप ख्याल, टप ठुमरी, ख्यालनुमा, तिरवट इत्यादि शैलियों का गायन यहां होता है |

- वामनराव देशपाण्डे के अनुसार:- ''ग्वालियर घराने की गायकी अत्यन्त प्रसादयुक्त होते हुए भी सीधी-सादी और सरल थी। इस कारण यह समझने में आसान तथा श्रोताओं का शर्तिया रंजन करने वाली तुरुप के ताश की यह गायकी हुकुम के इक्के जैसी है।''[10]

- यह बात हमें अन्य किसी घराने में देखने को नहीं मिलती और यही मुख्य विशेषता ग्वालियर घराने की गायकी को अन्य घरानों की गायकी से अलग करती है। पं.प्रभाकर गोहदकर जी के अनुसार- पीढ़ी की उपलब्धियाँ आगामी पीढ़ियों की आधारशिला बनती है। संगीत में समाज का दर्पण अधिक उभरता है। ग्वालियर परम्परा के ख्याल गायन पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि ख्याल गायन जैसी गहन शैली का आकार ग्वालियर से फूटा, यहीं पनपा और फिर पूरे उत्तर भारत में छा गया।

ग्वालियर घराने की परंपरागत गायकी

परम्परागत गायकी वह गायकी है, जिसमें कम से कम तीन पीढियों से गुरू-शिष्य की परम्परा चली आ रही हो तथा शिष्यों के अनेक क्रमवार शिष्य तैयार हों। यह क्रम सतत् जब चलता है, तब परम्परागत गायकी का रूप अपने आप सामने दिखने लगता है। गायकी का दूसरा प्रकार पारम्परिक गायकी जिसमें पिता ने अपने पुत्र को सिखाया, पुत्र ने अपने पुत्रों एवं नातियों को सिखाया। ग्वालियर गायकी को गंभीर और प्रतिष्ठित बनाने में इस घराने के गायकों के मुख्य योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। नत्थन पीरबख्श की गायकी में हमें दोनों परम्परा देखने को मिलती है। इस प्रकार की गायकी गुलाम रसूल के पुत्रों- मक्खन खाँ, शंकर खाँ हुए, मक्खन खाँ के पुत्र शिष्य-नत्थन पीरबख्श हुए। आगे इनके पुत्रों ने पारम्परिक तरीके से ग्वालियर घराने की गायकी को आगे बढ़ाया । ग्वालियर परम्परा के अनुयायी राजाभैया ने अपनी परम्परा बनाई, अपने शिष्य एवं पुत्र को ग्वालियर की गायकी सिखाकर ग्वालियर गायकी की परम्परा को कायम रखा, तथा गायन शैली का भी निर्माण किया ।

निष्कर्ष

इसमें कोई सन्देह नहीं कि कला रूपी पुष्प का सृजन पेड़ों द्वारा ही होता है किन्तु, उसके सौरभ को, उसके परिमल को प्रचार और प्रसार रूपी वायु की ही जरूरत होती है। यह काम किया ग्वालियर घराने के संगीताचार्यों ने । ग्वालियर नगरी में गुरु-शिष्य परम्परा के द्वारा अनेक शिष्य तैयार हो रहे थे। संगीत विद्या का दान ग्वालियर घराने के संगीताचार्य मुक्त हस्त से कर रहे थे। एक ओर जहाँ सुदूर से अनेक प्रतिभावान संगीत साधक यहाँ आकर पारम्परिक संगीत विद्या को आत्मसात कर ग्वालियर में ही संगीत का प्रचार एवं प्रसार कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर ग्वालियर के एवं बाहर से आए हुए अनेक संगीत साधक संगीत विद्या ग्रहण कर इस विद्या का सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रचार एवं प्रसार करने के महान उद्देश्य से ग्वालियर से बाहर भी जा रहे थे।

ग्वालियर का सांगीतिक इतिहास, ग्वालियर की संगीत परंपरा , ग्वालियर के कलाकार, ग्वालियर घराने के गुरु एवं शिष्यों की परंपरा, ग्वालियर की गायन शैली, समय के साथ बदलता ग्वालियर की गायकी का तरीका, संगीत में हुए परिवर्तनों में ग्वालियर का योगदान इत्यादि विषय इतने वृहद हैं, जिन्हें सूक्ष्म रूप में समझ पाना और समझा पाना मुश्किल है | जैसे -जैसे विषय में गहराई में उतरते हैं तो उतरते ही चले जाते हैं | कम शब्दों में विषय की गहराई तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है | संगीत को कम साधनों के बीच प्रचार प्रसार करने में कई मनीषियों ने अपना जीवन दिया | इन्हीं के कारण हम सीख पा रहे हैं , गा पा रहे हैं , सुन पा रहे हैं एवं अपने विचार रख पा रहे हैं |

संदर्भ

1) सेनगुप्ता, सुदीप्ता (2019). *ग्वालियर की संगीत परंपरा एवं ध्रुपद गायन शैली* , दिल्ली: कनिष्क पब्लिशिंग हाउस .(पृ. क्र. - 139)
2) सेनगुप्ता, सुदीप्ता (2019). *ग्वालियर की संगीत परंपरा एवं ध्रुपद गायन शैली* , दिल्ली: कनिष्क पब्लिशिंग हाउस .(पृ. क्र. - 180)
3) द्विवेदी, हरिहर (1906). *ग्वालियर के तोमर* , ग्वालियर : विद्या मंदिर प्रकाशन, (पृ. क्र. -299)
4) सेनगुप्ता, सुदीप्ता (2019). *ग्वालियर की संगीत परंपरा एवं ध्रुपद गायन शैली*, दिल्ली: कनिष्क पब्लिशिंग हाउस .(पृ. क्र. - 06)
5) बांगरे, अरुण (2011). *ग्वालियर की संगीत परंपरा*,दिल्ली: कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, (पृ. क्र. - 208)
6) सेनगुप्ता, सुदीप्ता (2019*). ग्वालियर की संगीत परंपरा एवं ध्रुपद गायन शैली* , दिल्ली: कनिष्क पब्लिशिंग हाउस .(पृ. क्र. - 101)
7) सेनगुप्ता, सुदीप्ता (2019).*ग्वालियर की संगीत परंपरा एवं ध्रुपद गायन शैली* , दिल्ली: कनिष्क पब्लिशिंग हाउस .(पृ. क्र.- 154)
8) गोहदकर, प्रभाकर (1983). *ग्वालियर की संगीत परंपरा एवं संस्कृति* , रीवा : अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय .(पृ. क्र. - 153)
9) बांगरे, अरुण (2011). *ग्वालियर की संगीत परंपरा*,दिल्ली: कनिष्क पब्लिशिंग हाउस . (पृ. क्र. - 208)
10) देशपांडे,वामानहरी, (1962).*घरंदाज गायकी* , मुंबई : मौज प्रकाशन गृह.(पृ. क्र.- 54)